ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की वर्तमान स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

- Parveen Kumar Yadav, Research Scholar, Department of Economics, Rani Durgawati University, Jabalpur (M.P)
- Dr. Narendra Kumar Koshti, Assistant Professor, Department of Economics, Govt. Mahakoshal Arts & Commerce College, Jabalpur (M.P)

शोध सार

वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था में 55 प्रतिशत जनसंख्या कृषि क्षेत्र में संलग्न है। किंतु राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र का योगदान केवल 14 प्रतिशत योगदान है। तीव्र आर्थिक विकास हेतु कृषि के साथ साथ उद्योगा का विकास करना आवश्यक है खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि पर आधारित उद्योग है एवं इन उद्योगों को कच्चे माल की प्राप्ति कृषि क्षेत्र पर निर्भर होती है। खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र के माध्यम से कृषि उपज का बेहतर उपयोग तथा मूल्यवर्धन द्वारा कृषको की आय को बढ़ाना एवं फसल का लाभकारी मूल्य दिलाने तथा कृषि उपज के विविधीकरण को प्रोत्साहित करने मे अति सहायक है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो के माध्यम से उत्पादों का स्वयं जीवन बढ़ाने तथा कृषि व प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थो के निर्यात हेतु अधिशेष के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया गया है साथ ही रोजगार की स्थिति का अध्ययन किया गया है। इस पत्र खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो ही संभावनाओ और समस्याओं का भी अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी :– भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को वर्तमान स्थिति, खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की समस्याएँ, खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में रोजगार, खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की संभावनाऐं।

प्रस्तावनाः– खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एक सूर्योदय क्षेत्र है तथा यह प्रमुख रुप से भारतीय अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के दो स्तंभ कृषि एवं उद्योग क्षेत्र के मध्य कड़ी के रुप में कार्य करता है।

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

भारत में विभिन्न फसलो का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में होता है। दूध, घी, केला, अमरुद, पपीता, आम और अदरक आदि फलो के उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है। सब्जियो के क्षेत्र में चीन के पश्चात भारत द्वितीय सबसे बड़ा उत्पादक देश है। अनाजो के मामले में चावल गेह् एवं दालो के उत्पादन में भी द्वितीय स्थान प्राप्त है। भारत में सुदृढ़ कृषि आधार के कारण खाद्य प्रसंस्करण उद्योगा का तीव्र गति से विकास हो रहा है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो में प्राथमिक कृषि उत्पादो का प्रसंस्करण कर उनका मूल्यवर्धन किया जाता है। साथ ही खाद्य उत्पादो को दीर्घ काल तक प्रसंस्करण से संरक्षित किया जाता है। भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो के अंतर्गत अनाज प्रसंस्करण उद्योग, फल और सब्जी प्रसंस्करण उद्योग, मसाला प्रसंस्करण उद्योग, दूध प्रसंस्करण उद्योग, मत्स्य एवं कुकुट प्रसंस्करण उद्योग, पोल्ट्री प्रसंस्करण उद्योग एवं उपभोक्ता उत्पादो जैसे कन्फेक्शनरी, कोको उत्पाद, चॉकलेट, मिष्ठान, सनैक्स, बेकरी उत्पाद, साफ्ट ड्रिंक्स, मिनरल जल, प्रोटीन वाले खाद्य उत्पादन आदि सम्मिलित है।खाद्य प्रसंस्करण उद्योग न केवल कृषि एवं उद्योग जगत को जोड़ सकता है बल्कि कृषको के परिवारो हेतु यह कृषि से जुड़ी गतिविधियो के द्वारा अतिरिक्त आय और रोजगार पाने का माध्यम बन सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
2. खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो में रोजगार की स्थिति का अध्ययन करना।
3. खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो के विकास हेतु संभावनाओं को ज्ञात करना।
4. खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो में आनी वाली समस्याओं का आकलन करना।

शोध विधि :– इस शोध पत्र में द्वितीय आँकड़ो को सम्मिलित किया गाया है। ये आकड़े भारतीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय (MOFPI), कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) एवं उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण (ASI) व अन्य वेबसाइट स एकत्रित किए गए हैं।

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण :–

पंजीकृत खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के उप–क्षेत्रवार उत्पादन, रोजगार, निवेश का वितरण (करोड़ में)

सं. क	मदें	फेक्ट्रियों की संख्या	कुल आउटपुट	कार्यरत व्यक्तियों की संख्या	स्थाई पूंजी	GVA	स्थाई पूंजी प्रति कारखाना	GVA %
1	फल एवं सब्जियों का प्रसंस्करण एवं सरक्षण	1254	21830	80440	8108	4759	6.47	27.88
2	मांस का प्रसंस्करण एवं संरक्षण	181	24846	29812	2794	1758	15.43	7.62
3	मछली का प्रसंस्करण एवं संरक्षण	535	38388	70298	4502	3411	8.41	9.75
4	डेयरी उत्पादो का निर्माण	2039	153260	171497	22429	12491	11.00	8.87
5	वनस्पति एवं जंतु तेल एवं वसा	3112	204537	64555	17890	7705	5.75	3.91
6	अनाज मिल के उत्पाद तैयार करना	18899	253775	345200	22769	17975	1.20	7.62
7	बेकरी उत्पादो का निर्माण	1767	25704	113043	5955	5459	3.37	26.96

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

8	स्टार्च और स्टार्च उत्पादो का निर्माण	629	112666	27352	5100	1570	8.11	16.19
9	चीनी का निर्माण	741	100672	227890	62505	17296	84.35	20.74
10	मैक्रोनी, नूडल्स व अन्य आटे के उत्पादों का निर्माण	118	3267	10048	2224	750	18.85	29.74
11	साफ्ट डिक्स का निर्माण	1658	25955	65903	12859	7495	7.76	40.60
12	कोको, चॉकलेटो व मिष्ठान का निर्माण	594	17898	46253	8572	4508	14.43	33.67
13	अन्य उत्पाद	8213	112192	643161	50340	36219		.
	कुल	39740	1094990	1853852	226045	121397	5.69	12.47

(स्त्रोतः उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण 2016–17)

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 01 में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के प्रमुख क्षेत्रों में कुल फेक्ट्रियों की संख्या, कुल आउटपुट, कार्यरत् व्यक्तियों की संख्या, स्थाई पूंजी एवं जीवीए को प्रदर्शित किया गया है। तालिका–1 से स्पष्ट होता है भारत में कुल फ्रेक्ट्रियों की संख्या 39740 है। जिनमें 1853852 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध है खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में अन्य उद्योगों की अपेक्षा में अधिक रोजगार उपलब्ध है। खाद्य प्रसस्करण क्षेत्र में अत्याधिक इकाईयाँ सूक्ष्म, माध्यम व लघु आकार की है। 2016–17 के उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण के अनुसार, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के प्रमुख 13 उद्योगों में कुल उत्पादन एवं कुल स्थाई पूंजी 226045 करोड़ रूपये थी।

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

तालिका – 2

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में रोजगार का वितरण

क्षेत्र	समग्र उद्योग	खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र	खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का हिस्सा (प्रतिशत में)
पंजीयन (2016–17)	149.11 लाख	18.54 लाख	12.43
अनिगमित (2015–16)	360.41 लाख	51.11 लाख	14.18

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 2 में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में रोजगार के वितरण को दर्शाया गया है। तालिका क्रं. 2 से स्पष्ट होता है कि भारत में कार्यरत सभी उद्योगों में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का विशेष महत्व है। पंजीकृत प्रसंस्करण उद्योग का समग्र उद्योगों में 12.43% की सहभागिता है। अतः स्पष्ट है कि अनिगमित खाद्य प्रसंस्करण इकाई क्षेत्र में पंजीकृत इकाई क्षेत्र की तुलना में अधिक व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध है।

आरेख क्र.–1

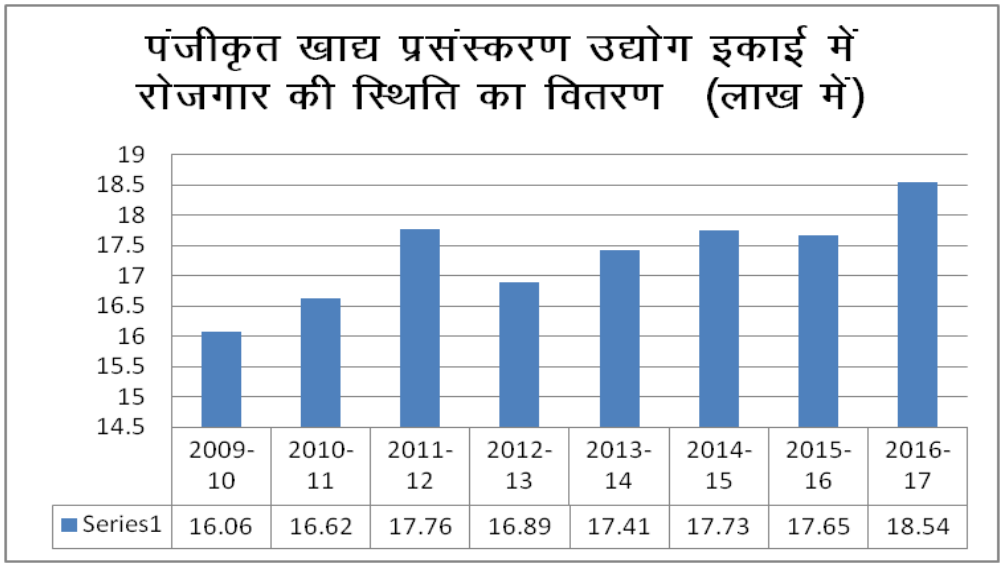

(स्त्रोतः खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की वेबसाइट)

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

उपर्युक्त आरेख क्र. 1 में पंजीकृत खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में रोजगार (2009 से 2017 तक) की स्थिति के वितरण को दर्शाया गया है। प्रस्तुत आरेख से स्पष्ट होता है कि प्रसंस्करण उद्योग में रोजगार में निरंतर वृद्धि हो रही है। सन् 2009–10 में 16.06 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध था। जो 2016–17 में बढ़कर 18.54 लाख व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुआ।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की समस्याएँ :–

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के विकास के लिए शासन द्वारा विभिन्न योजनाओं के दौरान अनेक प्रकार के महत्वपूर्ण कदम उठाए गए है किन्तु उद्योग आधारभूत समस्याओं से ग्रसित है जिनके कारण वांछित प्रगति नहीं कर पा रहे है। इन उद्योगों की प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैः–

- खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में कच्चा माल उचित समय व उचित मूल्य पर उपलब्ध नही हो पाता है। इस समस्या के अनेक कारण होते है, जैसे इन उद्योगो द्वारा कम मात्रा में कच्चा माल खरीदा जाता है, जिसके लिए अधिक कीमत देनी पड़ती है।

- भारतीय कृषि मानसून का एक जुआ है। फसल उत्पादन में हमेशा अनिश्चितता बनी रहती है। इसके अतिरिक्त कच्चे माल, विशेष रूप से फल और सब्जियाँ पूरे वर्ष उपलब्ध नही रहती हे।

- भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में उत्पादन की तकनीक अत्यधिक पुरानी है। परिणामस्वरूप प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद की लागत अधिक तथा किस्म निम्न श्रेणी की होती है।

- खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में कुशल और अर्ध–कुशल श्रम शक्ति की कमी से ग्रसित है।

- घरेलू बाजार में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रवेश के साथ, घरेलू उत्पादकों को कीमत के साथ–साथ गुणवत्ता और मानक के मामले में घरेलू बाजार में बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा है।

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

- भारतीय प्रसंस्कृत खाद्य बाजार में मूल्य निर्धारण और कराधान अन्य विकसित तथा विकासशील देशों के बराबर नहीं है, इस प्रकार यह वैश्विक बाजार में कम प्रतिस्पर्धा है।

- खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में लाभ कम और अस्थिर होते हैं, अतः ये लाभों के द्वारा पूंजी का विस्तार नहीं कर पाते ह।

- बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपनाई गई प्रचार रणनीति अत्यधिक गहन होती हैं, जो घरेलू खाद्य उत्पाद इनके सामने नहीं टिक पाते है।

- ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी भंडारण, विपणन, परिवहन व प्रसंस्करण की अपर्याप्त सुविधाआ के परिणामस्वरूप प्रतिवर्ष लगभग 40% खाद्यान बर्बाद हो जाता है।

- विभिन्न खाद्यान्नों के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर आने के पश्चात् भी अपर्याप्त आधारभूत संरचना, नवाचार की कमी, गुणवत्ता के मानकों पर कम ध्यान आदि के कारण खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में विकास की दर, इसकी क्षमता से कम है। तालिका क्र. 3 में सिफेट की वर्ष 2010 और 2015 की रिपोर्ट में अधिक हानि वाली खाद्यान्न फसलो का प्रतिशत प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 3

अधिक हानियां दर्शाने वाली प्रमुख फसलों का वितरण

फसलें	वर्ष 2010 की रिपोर्ट के अनुसार	वर्ष 2015 की रिपोर्ट के अनुसार
गेहूँ	6.0%	4.93%
धान	5.2%	5.53%
बाजरा	4.8%	5.23%
मक्का	4.1%	4.65%
अमरूद	18.0%	15.88%
आम	12.7%	9.16%

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

सेब	12.3%	10.39%
पपीता	7.4%	6.70%
अंगूट	8.4%	8.63%
केला	6.6%	7.76%

(स्त्रोतः खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट)

फसलों से सम्बधित अधिकांश बर्बादी प्रमुख रूप से कटाई, एकत्रण व मंडाई के दौरान होती है। उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनाजो की अपेक्षा में फलो में अधिक हानि होती हैं जो कि मुख्यतया प्रसंस्करण सुविधाओं के अभाव के कारण होता है।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की संभावनाएं :– विश्व के खाद्यान्नों में प्रमुख स्थान प्राप्त होने के कारण खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में रोजगार एवं विकास की आधार संभावनायें मौजूद हैं। कृषि क्षेत्र में संरचनात्मक विकास, प्रसंस्करण की कुशल तकनीक, कुशल श्रम–शक्ति एवं कृषिगत फसलों में होने वाले नुकसान को कम करके खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को अत्यधिक विकसित किया जा सकता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के महत्व को समझते हुए भारत सरकार के द्वारा इसके नियोजन, निरीक्षण व प्रोत्साहन हेत खाद्य प्रसंस्कण उद्योग मंत्रालय का गठित किया है। मंत्रालय द्वारा वर्तमान में इस उद्योग क्षेत्र को गति देने के हेतु वित्तीय प्रोत्साहन, मानव संसाधन विकास, राष्ट्रीय खाद्य प्रसंस्करण मिशन, मेगा फूड पार्क स्कीम एवं कोल्ड़ चेन संरचना आदि योजनाओं के माध्यम से प्रयास किए जा रहे है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास तथा हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होते है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार दिया जा सकता हैं जिससे युवाओं की बेराजगारी तथा गाँवो से शहरो की ओर पलायन की समस्या को दूर किया जा सकता है। इस आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के विकास के माध्यम से उत्पादन, उपभोग, रोजगार, निवेश, निर्यात और विकास की संभावनाओं को बढ़ावा मिलेगा।

विश्व की दूसरी सर्वाधिक तेजी से विकसित होने वाली भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक संसाधनों की पर्याप्त मात्रा के साथ अभी भी कृषि प्रमुखता वाली अर्थव्यवस्था

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

विद्यमान है। विश्व में जाती जा सकने वाली भूमि का 10 प्रतिशत भाग भारत में ही है। भारत में सभी प्रकार की जलवायु एवं ऋतुएँ पाई जाती है। इस सभी प्राकृतिक विशिष्टताओं के साथ भारत के पास विश्व के सबसे बड़े खाद्य प्रसंस्करण देश बनने की अपार सम्भावनाएं है। तेजी से हो रहे शहरीकरण उपभोग मे आ रहे परिवर्तन तथा लगातार बदलाव हो रहे है, इन रूचियों से प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग भी इन प्रसंस्कृत उत्पादो से मेल खाती है। विगत दशको में प्रसंस्करण उत्पादों की निरंतर बढ़ती मांग के चलते भारत के खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का तीव्र से विकास हुआ है।

निष्कर्ष :– उपर्युक्त शोध पत्र के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। हालांकि इन उद्योगों में कई चुनातियां मौजूद है, जिसका समाधान करना आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शासन ने स्वतन्त्रता के पश्चात् से ही इसके तीव्र गति से विकास के लिए विशेष बल दिया है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों से औद्योगिक बेरोजगारी और निर्धनता दूर करने एवं असमानताओं को निम्न करने में विशेष योगदान दे सकते है। भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगो को एक कुटीर, लघु व मध्यम उद्योग के रूप में विशेष स्थान प्राप्त है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को भविष्य काफी उज्जवल है। भारत में इन उद्योगों को योजनाबद्ध ढ़ंग स विकसित किए जाने की आवश्यकता है यदि खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का पर्याप्त रूप से विकास व उन्नति करनी है तो सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की राजकोषीय, मौद्रिक तथा प्रशासनिक प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे ये उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में अपना उचित स्थान प्राप्त कर देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम होगें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Khosla, Rajiv., Sidhu, H.S. and Dhillon, Sharanjit.,"Performace and Prospects of Agro-Processing Industries in Haryana", Proceeding of 2nd International Conference on Business Manement, 2012.

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

- Rais, Mohammad., Acharya, Shatroopa. and Vanloon, w, Gary., "food Processing Industry :- Opportunities in North East Region of India", The Nehu Journal, ISSN 0972-8406, Vol. XII, No.1, pp.37-51, June 2014.
- Shehrawat, Pardeeep S., "Agro Processing Industries - A challenging Enterpreneurship for Rural Development", Journal of Asia Enterpreneurship and Substainability, Vol.2, Issue.3,2006.
- Singh, Surendra., Tegegne, fisscha. and Ekenem, Enefiok., "The Food Processing Industry in India : Challenges and opportunitieas", Journal of food Distribution Research, Vol. 43, Issue-1, PP 81-89, March 2012.
- www.apeda.gov.in.
- www.ciphet.in.
- www.ibef.org.
- उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण रिपोर्ट 2017–18
- कुमार, डॉ. वीरेन्द्र, ''खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में अपार संभावनाएं'', कुरूक्षेत्र पत्रिका, दिसम्बर, 2018.
- खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट, 2018–19.
- भास्कर, भुवन, वैश्विक पटल पर छाने का तैयार भारत का खाद्य प्रसंस्करण उद्योग'', कुरूक्षेत्र पत्रिका, 2019.
- द्विवेदी, डॉ. कल्पना, ''भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि आधारित उद्योगों की भूमिका'', कुरूक्षेत्र पत्रिका, मई 2014.
- वैश्व, गौरी, शंकर, ''भारत में कृषि से जुड़े नए उद्योग धन्धे'', कुरूक्षेत्र पत्रिका, वर्ष 60, मासिक अक : 07, पृष्ठ क्र. 11–14, मई 2014.

Copyright • 2020 Authors